بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
Office Of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت
Mohalla Ahmadiyya Qadian-143516 Dt.Gurdaspur (PUNJAB)
Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-9815494687,
E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

ख़ुलासा ख़ुत्बा जुम्अः हज़रत अमीरुल मोमेनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ 2 सितम्बर 2016 स्थान कालसराए, जर्मनी।

हम यह नहीं कहते कि जलसा का स्थान अल्लाह न करे हज का स्थान है, जलसा एक इबादत तो नहीं लेकिन प्रशिक्षण शिविर ज़रूर है जो रूहानियत में तरक्की के लिए जारी किया गया है। इस में हम अगर बुरी बातें देना, गालियां देना गंदी और बेहूदा बातें करना किस्से सुनाने के काम करेंगे तो लक्ष्य नहीं पूरा हो सकता। तो इसमें हमें इन सब बातों से बचना है अगर हम लग़्व बातों से बचेंगे और लग़्व बातचीत से बचेंगे तो निश्चित रूप से एक शांत और शांतिपूर्ण और नेकियाँ बिखेरने वाला माहौल पैदा होगा।

तशह्हुद तऊज़ सूरत फातिहा की तिलावत के बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया।

अल्लाह तआला के फज़ल से आज से तीन दिन के लिए जमाअत अहमदिया जर्मनी को अपना जलसा सालाना आयोजित करने की तौफ़ीक़ मिल रही है और इस जुम्अः के साथ ही सालाना जलसा शुरू हो रहा है। जमाअत के लोगों के सुधार के लिए जलसा सालाना आयोजन की बुनियाद जो अल्लाह तआला के हुक्म से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने डाली थी इस पहले जलसा को इस साल 125 साल पूरे होने वाले हैं। वह जलसा जो कादियान की छोटी सी बस्ती में हुआ था और मस्जिद के एक भाग में 75 लोगों ने अपने अन्दर पवित्र परिवर्तन पैदा करने और दुनिया के सुधार और इस्लाम के संदेश को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का सहायक बनते हुए दुनिया में फैलाने का जो वादा क्या था उसका परिणाम हम आज देख रहे हैं कि अल्लाह तआला ने उनके काम और उनकी निय्यतों में ऐसी बरकत डाली कि आज यहां जर्मनी में जमाअत अहमदिया यहाँ के बड़े बड़े कंपलकस में से एक कंपलकस जो व्यापक क्षेत्रफल में फैला हुआ है उसमें अपना जलसा आयोजित कर रही हैकादियान की छोटी सी बस्ती के जलसों में अल्लाह तआला ने इतनी बरकत डाली कि आज इस राह पर दुनिया के लगभग सभी देशों में जहां जहां जमाअत स्थापित हैं जलसे आयोजित हो रहे हैं और इन जलसों का भी वही उद्देश्य है जो कादियान के जलसा का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उल्लेख किया था और जिसका मैं ने ठीक अभी उल्लेख किया है।

इसलिए यदि हम इस उद्देश्य के लिए आज यहां एकत्र हुए हैं तो हम भाग्यशाली हैं कि अल्लाह तआला के फज़लों के वारिस बनेंगे। अगर किसी त्योहार की अवधारणा के साथ आए हैं या हम में से कोई भी आया है तो

यह दुर्भाग्य पूर्ण होगा कि अल्लाह तआला ने हमें एक नेक काम के लिए इकट्ठा होने के लिए कहा और हम इकट्ठा भी हुए लेकिन नेक उद्देश्यों को प्राप्त करने के स्थान पर सांसारिक बातों में पड़ जाएं। इसलिए यहां आने वाला हर अहमदी इस बात को ध्यान में रखे कि इन तीन दिनों में दुनिया से पूरी तरह सम्बन्ध विच्छेद कर ले और फिर भी दुनिया में रहने के बावजूद सांसारिक कामों में पड़ने के बावजूद कि यह भी महत्त्वपूर्ण बात है सांसारिक काम रोज़गार व्यवसाय है चाहिए लेकिन इसके बावजूद उनकी नेकियों को जारी रखने की कोशिश करने के लिए प्रतिबद्ध करके जाएं ताकि जो यहाँ पैदा हुईं ताकि ख़ुदा तआला के फज़लों को अवशोषित करने वाले बनते रहें। इन दिनों में फर्ज़ और नफिल इबादतों के अलावा ज़िक्रे इलाही भी करते रहें। ज़िक्र से विचार पवित्र रहते हैं और अल्लाह तआला की ओर ध्यान रहता है और मनुष्य बुराइयों से बचा रहता है। यही इबादत का उद्देश्य है और ज़िक्रे इलाही अनिवार्य इबादतों की ओर भी ध्यान दिलाती रहती है और फिर अगर आदमी वास्तविक इबादत कर रहा है तो इसके कारण से ज़िक्रे इलाही कई ओर ध्यान रहता है। इसलिए इस बात को हर एक को याद रखना चाहिए।

कुछ दिन तक इन्शा अल्लाह हज्ज का फरीज़ा अदा किया जाएगा। अल्लाह तआला ने हज करने वालों को जिन तीन बुराइयों बचने की ओर ध्यान दिलाया है उनमें से पहला है रफस है फरमाया रफत है। काम उत्पादक बातें तो इसका अनुवाद किया ही जाता है लेकिन इसका मतलब बुरी बातें करना , गालियां देना गंदी और बेहूदा बातें करना गन्दे किस्से सुनाना व्यर्थ और बेकार बातें करना गप्पें आदि मारना बैठे मज्लिसें जमाना भी है यह सब इसमें शामिल हैं। तो यहाँ स्पष्ट रूप से सभी प्रकार की व्यर्थ लग़्व और गप्पें लगाने मज्लिसें लगाने से मना किया।फिर अल्लाह तआला ने फरमाया कि हज के दिनों में फसोक नहीं करना अर्थात आज्ञा पालन और अनुपालन से बाहर नहीं निकलना। अल्लाह तआला की आज्ञाओं को मानना है नेकी के रास्ते से जो अच्छाई का रास्ता तुम ने अपनाया है उसे अपनाए रखना है और बुराई से नहीं झुकना। फिर अल्लाह तआला फरमाता है कि हज के दिनों में जिदाल यानी हर प्रकार के झगड़े से लड़ाई पूरी तरह से बचना है। हज़रत मुस्लेह मौऊद एक अवसर पर कहा था कि हमारे जलसों में भी अगर इस सोच के साथ लोग आएं जो सिद्धांत अल्लाह तआला ने हज के दौरान बुराइयों से रुकने का वर्णन किया है तो असाधारण सुधार हो सकता है। निश्चित रूप से आप ने सुधार के लिए यह बड़ी असली सैद्धांतिक बात बयान फ़रमा दी। यह नहीं हम कहते कि जलसा का स्थान अल्लाह न करे हज का स्थान है या अब जैसे कुछ ग़ैर अहमदियों ने हम पर आरोप लगाना शुरू कर दिया है कि कादियान हम जाते हैं इसलिए हज का स्थान देते हैं यह ग़लत है लेकिन धार्मिक उन्नति प्राप्त करने के लिए और अपना सुधार के लिए यह आधार है जो अल्लाह तआला ने एक आधार फ़रमा दिया जहां बड़े इकट्ठ हों भीड़ हों इन बातों का ख्याल रखना और अगर हम धार्मिक विकास के लिए अपना सुधार के लिए प्रस्तुत होने वाले जलसा में इन बातों का ख्याल रखना होगा तो हमारा सुधार की गुणवत्ता बढ़ेंगी। जलसा एक इबादत तो नहीं लेकिन प्रशिक्षण शिविर ज़रूर है जो अध्यात्म में विकास के लिए जारी किया गया है। इस में हम अगर बुरी बातें देना, गालियां देना गंदी और बेहूदा बातें करना किस्से सुनाने के काम करेंगे तो लक्ष्य नहीं पूरा हो सकता। तो इसमें हमें इन सब बातों से बचना है अगर हम लग़्व बातों से बचेंगे और लग़्व बातचीत से बचेंगे तो निश्चित रूप से एक शांत और शांतिपूर्ण और नेकियाँ बिखेरने वाला माहौल पैदा होगा और जलसा का उद्देश्य पूरा होगा। फिर फिसूक जो अल्लाह तआला की आज्ञाकारिता से बाहर निकलने का गुनाह है इससे बचना है यह महत्त्वपूर्ण बात है कि हम सही रूप में जब धार्मिक उद्देश्य के लिए आए हैं अल्लाह तआला की आज्ञाकारिता का बोझ अपनी गर्दन पर हमेशा डाले रखें।

अत: सारांश यह कि हम ने कुरआन की शिक्षा को अपने ऊपर लागू करते हुए अल्लाह तआला की इबादत

का अधिकार भी देना है और बाकी आदेश का पालन भी करना है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जलसा के जो उद्देश्य वर्णन किए हैं वे इन्हीं तीन बातों के आसपास वास्तव में घूमते हैं कि अपने सुधार का अवसर मिले। हमारा अपना आत्म सुधार हो। व्यर्थ बातों से परहेज़ हो अल्लाह तआला का ध्यान पैदा हो और उसकी आज्ञाओं पर पूर्ण आज्ञाकारिता से चलने की ओर विशेष ध्यान पैदा हो और अपने भाइयों से खास रिश्ता मुहब्बत और भाईचारा स्थापित हो और हर प्रकार के स्वार्थ और झगड़े को खत्म करें। इसलिए जलसा में शामिल होने वाले प्रत्येक व्यक्ति को यह याद रखना चाहिए कि वह जहां इन दिनों में हर छोटी से छोटी बात में अपने आत्म सुधार की ओर ध्यान देना है अपना समय इधर उधर बर्बाद करने के बजाय जलसा में शामिल होने के उद्देश्य पूरा करते हुए जलसा के सभी कार्यक्रम सुनने है। इस जलसा से वास्तविक फ़ैज़ पाने के लिए झगड़े और लड़ाई का सवाल नहीं कि झगड़ा होता है या नहीं होता जलसा के वास्तविक फ़ैज़ पाने के लिए और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं का वारिस बनने के लिए जिन के पुराने झगड़े चल रहे हैं यह नहीं कि यहां आ कर झगड़े करें जिनके पुराने झगड़े चल रहे हैं उन्हें भी एक दूसरे से आगे बढ़कर सुलह करके उन्हें समाप्त करना चाहिए। अपने अंहकार समाप्त करें।

अल्लाह तआला फरमाता है कि

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۙ﴿۲﴾ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ۙ﴿۳﴾ وَ الَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ

वास्तव में सफल हो गए वह मोमिन जो अपनी नमाज़ों में विनम्रता करते हैं और लग़्व से बचने वाले हैं। अल्लाह तआला के पूर्ण आज्ञाकारी बनते हुए नमाज़ें पढ़ो। कई बार लोग मुझे लिखते भी हैं कि जलसा के दिनों में विनम्रता और विलय की नमाज़ों का उन्हें बहुत मज़ा मिलता है तो इस सुख को प्राप्त करने के लिए हर एक को कोशिश करनी चाहिए ताकि इन मोमिनों में शामिल होने वाले बन जाएँ जो कल्याण करने वाले हैं जो सफल हैं लेकिन अल्लाह तआला कल्याण पाने वालों और सफल होने वालों के लिए विभिन्न माध्यम बताए हैं दूसरा माध्यम अल्लाह तआला लग़्व से दूरी का कहा है। इसलिए इस ओर भी हर अहमदी को जलसा के दिनों में भी और बाद में भी विशेष ध्यान देना चाहिए। हर तरह का झूठ हर तरह का गुनाह ताश जूआ गप्पें मारना आरोप निकालना यह सब बातें इसमें शामिल हैं।हमें अल्लाह तआला का शुक्र अदा करना चाहिए कि उस ने हमें तौफीक दे दी कि हम ने ज़माने के इमाम को स्वीकार किया है जिन्होंने हमें बार बार इन ठगना से बचने की ओर ध्यान दिलाया है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह लग़्व के बारे में वर्णन फरमाते हुए फरमाते हैं कि रिहाई प्राप्त मोमिन वे लोग हैं जो लोग लग़्व कार्यों और लग़्व बातों और लग़्व हरकतों लग़्व जलसों और लग़्व सहबतों और लग़्व संबंधों और लग़्व जोशों से दूर हो जाते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सभी लग़्वों की पहचान करा दी। अब जितनी बातों का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उल्लेख किया है यह सब एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं। एक लग़्व काम दूसरे लग़्व काम की तरफ लेकर जाता है और यदि विचार करें तो लग़्व काम लग़्व बातें और लग़्व हरकतें जिन से घटित होती हैं वे लग़्व मज्लिसों में बैठने वाले होते हैं लग़्व लोगों की सोहबत और मेल मिलाप से संबंध से पैदा होती हैं लेकिन हम जलसा में आने वालों में इन दिनों में ऐसा शुद्ध परिवर्तन पैदा होनी चाहिए कि केवल जलसा के दिनों में नहीं बल्कि बाद में भी हमारी सोहबत में बैठने वाले हमेशा लग़्व से परहेज़ करने वाले हों ऐसी मज्लिसें हों जिनके साथ बैठने वाले कभी रद्द नहीं किए जाते। अल्लाह तआला के यहाँ मक्बूल होने वाले लोग होते हैं। हमारे आचरण उच्च हों हमारी सच्चाई की गुणवत्ता उच्च हों जो दूसरों को भी हमारे व्यावहारिक नमूनों को देखकर अच्छा परिवर्तन पैदा करने वाला बना दे। एक जगह हमें नसीहत फरमाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि एक और बात भी महत्त्वपूर्ण है कि हमारी जमाअत को

याद रखना चाहिए और वह यह है कि ज़बान को व्यर्थ बातों से आज़ाद रखा जाए। फरमाया ज़बान अस्तित्व का दहलीज़ है और ज़बान को शुद्ध करने से मानो ख़ुदा तआला अस्तित्व की दहलीज़ में आ जाता है। जब ख़ुदा तआला दहलीज़ में आ गया तो अंदर आना क्या आश्चर्य है। दहलीज़ क्या है। दहलीज़ कहते हैं किसी घर के मुख्य दरवाज़े को मेन गेट को जब ख़ुद तआला आप के घर के निकट दरवाज़ा पर आ गया तो आप कहते हैं कि यह अंदर आना कोई दूर नहीं कोई आश्चर्य नहीं कर सकता कि वह अंदर नहीं देगा। इसलिए अल्लाह तआला लग़्व से बचने वालों और उत्तम चरित्र दिखाने वालों नरम ज़बान का उपयोग करने वालों के क़रीब हो जाता है और इतने क़रीब हो जाता है कि अगर नेकियों में नियमित रहे तो ख़ुदा तआला तो ऐसे लोगों पर अपना फज़ल फरमाते हुए उन्हें अपना बना लेता है। अल्लाह तआला का घर में आना यही है कि अपने बन्दा को अपना बना ले और जब अल्लाह तआला अपना बना लेता है तो इबादत में बढ़ने और नेकियों में बढ़ने के आदमी को ताकत मिलती चली जाती है। अत: नेकियों से नेकियाँ पैदा होती हैं और अल्लाह तआला के नज़दीकी के रास्ते खुलते चले जाते हैं। हम यहाँ आए हैं जैसा कि मैं पहले भी कह चुका हूं कि अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने के लिए अपने अंदर शुद्ध परिवर्तन पैदा। जब यह उद्देश्य तो केवल भाषण सुनकर ज्ञान का आन्नद उठाने से यह लक्ष्य हासिल नहीं हो सकता। जब तक हम अपने अंदर व्यावहारिक परिवर्तन पैदा न करें और व्यावहारिक परिवर्तन के लिए जहां इबादत करते हुए अल्लाह तआला का हक देना है वहाँ उच्च नैतिकता और लग़्व से बचकर एक दूसरे का हक देना है। इसलिए इसकी ओर विशेष तो ध्यान देने की ज़रूरत है। यह अल्लाह तआला की कृपा है कि उसने हमारी भूलों को छिपाया हुआ है और हमारी गलतियां उभर कर दूसरों के सामने नहीं आतीं वरना अगर हम में से हर एक अपनी समीक्षा करे तो हमें पता लगे कि कितनी कितनी ग़लतियाँ कमज़ोरियां हम में हैं और ये कमज़ोरियां जमाअत और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के नाम को बदनाम करने का कारण बन सकती हैं इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी जमाअत को नसीहत करते हुए यह भी फरमाया है कि हमारी ओर सम्बंधित होकर हमें बदनाम मत करो। अगर हमारी इबादतों की गुणवत्ता अच्छी नहीं तो हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को बदनाम करने का साधन बन रहे होंगे अगर हमारे चरित्र अच्छे नहीं तो हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को बदनाम करने का माध्यम बन रहे होंगे। इसलिए हम अहमदियों पर एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है और हमें अपनी समीक्षा करते रहने की ज़रूरत है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक मौके पर नसीहत करते हुए फरमाया कि जो व्यक्ति ईमान कायम रखना चाहता है वह अच्छे कर्म में तरक्की करे।इसलिए इन दिनों में और हमेशा अपनी नमाज़ में विनय तथा विनम्रता पैदा करने की कोशिश करनी चाहिए ताकि ख़ुदा तआला से हमारा संबंध मज़बूत हो और इन जलसों में शामिल होने का वास्तविक उद्देश्य तो यही है कि हम रूहानी तरक्की करें आपस में अच्छे संबंध और एक दूसरे की भावनाओं का ख्याल रखने की ओर ध्यान दिलाते हुए आपने फ़रमाया जैसे रिफक नम्रता और नर्मी से अपनी औलाद से मामला करते हो ऐसे ही आपस में भाइयों से करो। फरमाया जिस के चरित्र अच्छे नहीं हैं मुझे इस के ईमान का ख़तरा है क्योंकि यह अहंकार की एक जड़ है आप फरमाते हैं कि अहंकार करने वाला दूसरे का वस्तुत: हमदर्द नहीं हो सकता अपनी सहानुभूति को सिर्फ मुसलमानों तक ही सीमित न रखें बल्कि प्रत्येक के साथ करो चाहे वह मुसलमान है या ग़ैर मुस्लिम प्रत्येक के साथ सहानुभूति करो। फरमाया ख़ुदा सब का रब्ब है केवल मुसलमानों का ख़ुदा नहीं है हां मुसलमानों की विशेष रूप से सहानुभूति करो।

इसलिए ये वे उपदेश हैं जो हमें अपने अंदर आध्यात्मिक परिवर्तन पैदा करने वाला बना सकते हैं।अल्लाह तआला करे कि हम जलसे से वास्तविक फ़ैज़ पाने वाले हों और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं के वारिस बनें।

☆ ☆ ☆